द्वादश भावों में शुक्र के फल

- रमा कपूर, मनमोहन शर्मा

लग्नस्थ शुक्र

शुभ फल- जातक का रूप सुन्दर, धनवान राजप्रिय होता है। शिल्पकला में निपुण, गायन में चतुर, उत्तम स्त्रियों का उपभोग करने वाला, शुभ वचन बोलने वाला होता है। दीर्घायु होता है।

अशुभ फल- इसे वात और पित्त के रोग होते हैं। चक्षु: नाशक होता है। इसे कुत्ते से, सींग वाले पशुओं से कष्ट और भय होता है। ऐसा व्यक्ति भाग्य भरोसे रहता है। शुक्र मंगल से पीड़ित हो तो व्यक्ति व्यभिचारी, शराबी नीच, दुष्ट प्रकृति का होता है।

द्वितीयस्थ शुक्र

शुभ फल- मुख और शरीर सुन्दर होता है। बुद्धि तीव्र होती है। मधुरभाषी होता है। विद्या व स्त्री से धन प्राप्त करता है। चाँदी और सीसा के व्यापार से धनी और बहुपालक होता है। इसकी रूचि अच्छे खाने पीने में होती है। बत्तीसवें वर्ष उत्तम स्त्री तथा भूमि का लाभ होता है। कुटुम्ब बड़ा होता है।

अशुभ फल- पाप ग्रह से युक्त शुक्र हो तो व्यक्ति शराबी होता है आंखों के रोग होते हैं। कुटुम्ब नष्ट होता है। धन की हानि होती है। पत्नी सदा बीमार रहती है अत: इलाज पर भारी खर्च होता है

तृतीयस्थ शुक्र

शुभ फल- भाइयों से सुख मिलता है। मन के संकल्प सफल होते हैं। सहोदर बन्धुओं से घिरा रहता है। काम में शीघ्र गति होती है। उत्साह सम्पन्न, अपने लोगों को बंधन से छुड़ाने वाला माननीय होता है। कवि, चित्रकार,

भाषाशास्त्रज्ञ होता है।

अशुभ फल- कड़वा बोलता है। स्त्री सुख तथा संपत्ति से वंचित रहता है। विवाह में विघ्न, पत्नी से वैमनस्य होता है। दुबला, कंजूस होता है। पुत्र से दु:खी रहता है।

चतुर्थभावस्थ शुक्र

शुभ फल- मातृसुख, वाहन, अन्न तथा वस्त्र का सुख होता है। भूमिपति होता है। बहुत स्त्री-पुत्रों से युक्त होता है। अच्छा घर होता है।

अशुभ फल- निर्धन, कफ रोग तथा नेत्र रोग से पीड़ित रहता है। माता को कष्ट होता है। खेती, वाहन आदि नहीं होते। हमेशा आर्थिक चिन्ता कराता है।

पंचमस्थ शुक्र

शुभ फल- शीघ्र ही पुत्र की प्राप्ति, सहसा प्रचुर धन का लाभ, राजमन्त्री, न्यायाधीश होता है। सट्टा, लाटरी से लाभ होता है। स्त्री सदैव प्रसन्न रहती है।

अशुभ फल- जातक मूर्ख होता है। पुत्रों को कष्ट होता है। खर्चीले होने के कारण आर्थिक कष्ट रहता है।

षष्ठभावस्थ शुक्र

शुभ फल- भाई-बहिनों, मामा का सुख प्राप्त होता है। जातक के शत्रु नहीं होते। श्रेष्ठकुल में होता है। (2,7) राशि का हो तो सदैव सफलता मिलती है।

अशुभ फल- शत्रुओं का कभी नाश नहीं होता। निरंतर व्यय की वृद्धि होती है। प्रचुरमात्रा में रोग होते हैं। स्त्रियों को अप्रिय होता है। अवैध संबंध अनेक युवतियों से होता है।

सप्तमभावस्थ शुक्र

शुभ फल- स्त्री से पूर्ण सुख प्राप्त होता है। सन्तान सुख प्रचुर मात्रा में प्राप्त होता है। श्रेष्ठ कलाकार होता है। धन से युक्त, चतुर, आर्कषक स्त्री का

पति होता है। छोटी आयु में ही विवाह हो जाता है।

अशुभ फल- जातक की कमर में पीड़ा होती है। जातक कलहप्रिय होता है। पाप ग्रह से युक्त नीच राशि में हो तो पहली पत्नी की मृत्यु होती है और दूसरा विवाह होता है।

अष्टमभावगत शुक्र

शुभ फल- जातक दीर्घायु होता है। वाहन, नौकरों का सुख होता है। जातक धर्मात्मा तथा राजसेवक होता है। स्त्री धन प्राप्त होता है। मृत्यु शांति से होती है। बीमे से लाभ होता है। ट्रस्टी होकर अच्छा धन प्राप्त करते हैं।

अशुभ फल- जातक नीच, कठोर वचन बोलने वाला अनुचित कर्म करने वाला होता है। मृत्यु वात-कफ या क्षुधा होती है। पत्नी खर्चीली होती है। मिथुन-वृश्चिक राशि में हो तो स्त्री, पुत्रों से कलह होती है।

नवमस्थ शुक्र

शुभ फल- मनुष्य धनवान होता है। यज्ञ, दान आदि धार्मिक कार्य करता है। जातक धनाढ्य स्त्री सुख युक्त, मित्रों से युक्त होता है। अपने बाहुबल से उपार्जित धन को भोगने वाला होता है। जातक धन का व्यय तीर्थ यात्रा, उत्सव, अतिथियों के पूजन में रहता है। अभिनय में निपुण होता है।

अशुभ फल- पिता पर संकट आता है। धन हानि होती है। गुरू पत्नी से व्यभिचार करता है। विवाह विजातीय, वा आयु में बड़ी स्त्री, वा विधवा से होता है।

दशमस्थ शुक्र

शुभ फल- जातक बहुत प्रतापी होता है। स्त्री से अच्छा लाभ और सम्मान प्राप्त होता है। विवाह से भाग्योदय, धन लाभ होता है। उसके पास वाहन, रत्न चांदी बहुमूल्य वस्तुएँ होती है। स्त्री-पुत्रों से बहुत प्रेम करता है। व्यवसाय में सफल तथा प्रभावशाली होता है।

अशुभ फल- सन्तान की चिन्ता बनी रहती है। धन नष्ट होता है। जातक बधिर होता है। मीन राशि के शुक्र में द्विभार्यायोग भी हो सकता है।

एकादशस्थ शुक्र

शुभ फल- जातक उत्तम स्त्री, तथा रत्नों से युक्त होता है। शरीर निरोग होता है। मोती, चांदी के व्यापार से धन लाभ होता है। मित्रों के परिवारों से विवाह संबंध होते हैं।

अशुभ फल- सदैव मानसिक चिन्ताएं लगी रहती हैं। पाप ग्रहों से युक्त हो तो बुरे कामों से धन लाभ होता है।

व्ययस्थानगत शुक्र

शुभ फल- जातक का विवाह जल्दी होता है। जातक धनवान और शय्या आदि सुख से युक्त होता है।

अशुभ फल- मित्रों से विरोध होता है। खर्चे बहुत होते हैं। शनि की दृष्टि हो तो पत्नी की मृत्यु, स्त्री वियोग, तलाक देना, आदि प्रकार से स्त्री सुख नष्ट होता है।

*****